पुरस्कार समर्पण समारोह का भव्य आयोजन

यूक्रेन सेंटर को मिला प्रेक्षा पुरस्कार

प्रेक्षाध्यान के अनेक सेन्टर देश विदेश में चल रहे हैं जिसमें जापान, यूक्रेन, कजाकिस्तान, अमेरिका, इंगलैण्ड, जर्मनी, रूस, हॉलैण्ड आदि देश प्रमुख है। इस वर्ष का प्रेक्षा पुरस्कार प्रेक्षाध्यान के प्रसार में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रेक्षाध्यान केन्द्र यूक्रेन सेन्टर को दिया गया। आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आज (14 नवज़्बर) को स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के चेयरमेन ओ.पी. भट्ट के हाथों से तोलामल मदनचन्द गोठी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 2010 का प्रेक्षा पुरस्कार के रूप में प्रतिक चिन्ह, 1.50 लाख रुपये का चैक एवं साहित्य प्रदान किया गया।

इस विशेष समारोह को संबोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने स्थानीय तेरापंथ भवन में उपस्थित विदेशी प्रेक्षाध्यान के शिविरार्थियों एवं उपस्थित जनमेदनी को संबोधित करते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान की साधना का सार है समता की साधना। समता जिसमें राग, द्वेष नहीं होता है, हमारी दुनिया में अनेक प्राणी हैं, संसार में प्राणियों 84 लाख योनियां बताई गई है कि सबसे अच्छा प्राणी कौन है तो इसका मेरा उत्तर होगा आदमी सबसे अच्छा प्राणी है। आदमी को सबसे अच्छा प्राणी इसलिए कहा गया है कि उसने पास ऐसी शक्ति है कि वह परमात्मा बन सकता है और कोई दूसरा प्राणी परमात्मा नहीं बन सकता।

मनुष्य के पास जैसा मस्तिष्क है वैसा दूसरे प्राणी के पास नहीं है, मनुष्य ने अध्ययन कर रोबॉट, कज़्प्यूटर आदि अनेक मशीनों का निर्माण कर लिया इस आधार पर आदमी को श्रेष्ठ प्राणी कहा जा सकता है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि यदि मुझे यह पूछे कि दिखती दुनिया में खराब प्राणी कौन है तो मेरा उत्तर होगा मनुष्य सबसे खराब प्राणी है क्योंकि उसमें जब हिंसा का भूत सवार हो जाता है तो वह बड़ी से बड़ी हिंसा कर देता है।

मनुष्य के भीतर भावों का संवेग है लोभ, क्रोध, आदि हैं उसमें खराब विचार भी हैं और अच्छे विचार भी हैं, हिंसा का बीज भी है और अहिंसा का बीज भी है हम अच्छे भावों को पुष्ट करें, बुरे भावों को छोड़ें, गुस्सा आता है तो उसे उपशम की साधना के द्वारा कम करने का प्रयास करें। दुर्जन व्यक्ति है तो उसे सज्जन बनाने का प्रयास करें। कंजूस व्यक्ति है तो उसे दान की महिमा बताकर दानवीर बनाने का प्रयत्न करें, सत्य के द्वारा असत्य को जीतने का प्रयास करें।

उन्होंने कहा कि मेरे सामने विदेशी शिविरार्थी हैं, जो रश्यिन भाषा को समझने वाले हैं, उनके लिए हिन्दी भाषा कठिन है और हमारे लिए रश्यिन भाषा समझना कठिन है। यदि पूरी दुनिया में एक ही भाषा होती तो ज्ञान अर्जन करने में कठिनाई नहीं होती।

उन्होंने कहा कि स्टेट बैंक के चेयरमेन ओ.पी. भट्ट मानो धन की दुनिया में जीने वाले हैं यह अर्थ से कितने लोगों की सहायता करते हैं मेरा कहना है कि अर्थ के साथ संयम जुड़ा रहे, अर्थ प्राप्ति में प्रमाणिकता रहे, अर्थ उपभोग में संयम रहे मनुष्यों के प्रति दया, करुणा की भावना रहे तो अनेक समस्याओं का समाधान संभव है।

जिनको यह पुरस्कार दिया जा रहा है वे प्रेक्षाध्यान की गतिविधियों को और आगे बढ़ाने का प्रयास करें, आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ का यह अवदान है आज वे नहीं है किंतु उनके जो अवदान हैं उनको आत्मसात कर आगे बढ़ाने का प्रयास करें, अपनी चेतना को आगे बढ़ाने का प्रयास करें, अच्छी शिक्षा जीवन में आए ऐसा प्रयास करना चाहिए।

मुज़्य अतिथि स्टेट बैंक के चेयरमन ओ.पी. भट्ट ने कहा कि मैं बिजनेस कॉज़्फ्रेंस में बोला हूं, आध्यात्मिक सज़्मेलनों में नहीं। व्यापारी समाज में पला, पढ़ा हूं, व्यापार में सफलता के लिए पॉवर के लिए जो प्रयास की आवश्यकता है उससे जीवन में सफलता मिल आए यह जरूरी नहीं है, आज विश्व में उपभोक्तावाद संग्रह की प्रवृत्ति और लालच बहुत बढ़ गया है इसका प्रभाव व्यक्ति को, समाज को तबाह कर रहा है। जिसका अभी हमें अहसास नहीं है, व्यक्ति की स्वार्थ चेतना बहुत बढ़ गई है उसका अहम् बहुत बढ़ गया है, जबकि हम विश्व की आकाशगंगा में कितने छोटे हैं यहां अनगिनत सूर्य हैं, अनगिनत आकाशगंगा है।

उन्होंने कहा कि 'एक राजा ने एक संत को कहा कि आप बहुत बड़े त्यागी हैं और संत ने कहा मेरे से बड़े त्यागी तो तुम हो क्योंकि मैंने तो सिर्फ पदार्थ सुख को छोड़ा है, तुमने तो तुच्छ पदार्थ सुख के लिए आत्मिक सुख को त्याग दिया इसलिए बड़े त्यागी तुम हो।' हमें भावात्मक और आध्यात्मिक विकास कठिन लगते हैं किंतु मेरी समझ में यह कठिन नहीं है हमारी स्टेट बैंक में सोशल वैल्यूज का बहुत महत्व है, अभी हम ग्रामीण युवकों पर बहुत ध्यान दें रहे हैं ग्रामीण क्षेत्रों का विकास ही देश का विकास है। स्टेट बैंक के दो लाख कर्मचारियों में ज़ी आंतरिक विकास, भावात्मक विकास, आंतरिक चेतना को जागृत करने के लिए अनेक कार्यक्रम कर रहे हैं। भारत एक महान देश है इसमें महान संतों की लंबी श्रृंखला रही है, महर्षि भागीरथ जो स्वर्ग से गंगा को पृथ्वी पर ले आये स्वामी योगानन्द ने क्रिया योग का प्रचार किया, स्वामी सचिदानन्द ने दिव्य योग का प्रसार किया उसी श्रृंखला में आचार्य महाप्रज्ञ ने हमें प्रेक्षाध्यान दिया है यह जीवन विकास का बहुत बड़ा माध्यम है, इससे हमारी इन्द्रियां, मन और चेतना शुद्ध होती है, दिव्य होती है, आप किसी योग, ज्ञान योग, कर्म योग या भक्ति योग में जाएं सबमें ध्यान जरूरी है।

मैं बहुत प्रसन्न हूं कि यूक्रेन में भी प्रेक्षाध्यान का केन्द्र चल रहा है। पांच सौ वर्ष पहले मुगल सम्राट बाबर समरकंद से भारत आया, मैं आशा करता हूं कि आज के आधुनिक व्यक्ति भी हमारी पुरानी भारतीय परज़्परा को समझेंगे और उसके प्रयोग से आप स्वयं को लाभान्वित करेगा।

इस अवसर पर चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष एवं मदनचन्द तोलामल गोठी चेरिटेबल ट्रस्ट के मुज्य ट्रस्टी सुमतिचन्द गोठी ने स्वागत भाषण दिया एवं उनके द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला 2011 का प्रेक्षा पुरस्कार कुरगन की नतालिया क्रिवोरोतोवा को देने की घोषणा की।

प्रेक्षाध्यान केन्द्र यूक्रेन के प्रतिनिधि एलेक्जेंडर ज़्यूजिक डायरेक्टर हैं उन्होंने 550 कि.मी. की पैदल यात्रा रूस में की और वह भारत में भी पैदल यात्रा करना चाहते हैं, उन्होंने कहा कि जो मैंने यहां आकर ज्ञान प्राप्त किया है वह मेरे लिए बहुत कीमती है, परिवार में मैत्री, प्रेम से बढ़कर कोई धन नहीं हो सकता। अगर इंसान अपने देश से प्रेम करता है वह हमेशा खुश रहेगा, इंसान अगर पूरी दुनिया से प्रेम करता है तो वह हर जगह खुश रह सकता है, मैं सब दुनिया से प्रेम करता हूं इसलिए मैं खुश हूं। उन्होंने अपने जीवन की घटनाओं का भी जिक्र करते हुए कहा कि मैं प्रेक्षाध्यान का प्रयोग दूसरे लोगों में भी बांटना चाहता हूं।

इस अवसर पर रशिया से समागत लोगों ने रशियन व हिन्दी भाषा में सामुहिक गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन बजरंग जैन ने किया।

– शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)